



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

५५
२३।५

सं. 193]

नई दिल्ली, मंगलबार, 30 अप्रैल 2002/वैशाख 10, 1924

No. 193]

NEW DELHI, TUESDAY, APRIL 30, 2002/ - / SAKHA 10, 1924

विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय

(कम्पनी कार्य विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 30 अप्रैल, 2002

सा.का.नि. 308(अ).—केन्द्रीय सरकार, कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) कों धारा 637 के कों उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारत सरकार के विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय (कम्पनी कार्य विभाग) की अधिसूचना सं0 सा.का.नि.555(अ) तारीख 26.7.2001 मे, जो भारत के राजपत्र, भाग 2, खण्ड 3, उपखण्ड (i) में तारीख 26.7.2001 को प्रकाशित की गई थी, निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :-

उक्त अधिसूचना मे. खण्ड (1) मे, -

(i) उपखण्ड (क) मे,-

(क) मद (iv) के स्थान पर निम्नलिखित मद अन्तः स्थापित की जानी अर्थात् -

“ (iv) दस रुपए के अभिहित मूल्य से कम का कोई नया साधारण । ” केर्गी :

परन्तु यह 26.7.2001 को और उक्त अधिसूचना के जारी होने के पश्चात निगमित निधि कम्पनियों को लागू होगा :

परन्तु यह और कि शेयरों के निगमन के लिए कोई सेवा प्रभार उद्गृहीत नहीं किए जाएंगे ” ;

(ख) भद (v) के अन्त में निम्नलिखित परन्तुक अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

“ परन्तु यह निर्बन्धन नए निषेपधारकों या उधार लेने वालों को सौ रुपए के अंकित मूल्य तक के शेयरों के आबंटन को और निदेशकों द्वारा धारित अर्हता शेयरों के संबंध में लागू नहीं होगा ”;

(ii) उपखण्ड (ख) की मद (iii) के परन्तुकों में दोनों स्थानों पर आने वाले अंक “ 2002 ” के स्थान पर अंक “ 2003 ” रखे जाएंगे ;

(iii) उपखण्ड (घ) में—

(अ) मद (i) के प्रथम परन्तुक के स्थान पर निम्नलिखित परन्तुक रखा जाएगा, अर्थात् :-

“ परन्तु 26 जुलाई, 2001 को या उसके पूर्व निगमित निधियों की दशा में, जिनके पास पूर्वोक्त परिसीमाओं से अधिक के निषेप हैं, उन्हें नीचे दी गई समय सारणी के अनुसार शुद्ध स्वामित्वाधीन निधि स्थिति को बढ़ाकर या अनुकल्पतः निषेप को कम

करके विहित सीमा तक लाया जाएगा :

शुद्ध स्वामित्वाधीन निधि का निषेपों की तुलना में अनुपात (जैसा 31.3.2001 को है)	वह तारीख जिस तक कम्पनी को विहित 1:20 अधिकतम सीमा अभिप्राप्त करनी है।
क) 1:20 से अधिक किन्तु 1:25 तक	31.3.2004 तक
ख) 1:25 से अधिक किन्तु 1:40 तक	31.3.2005 तक
ग) 1:40 से अधिक किन्तु 1:80 तक	31.3.2006 तक
घ) 1:80 से अधिक और ऊपर	31.3.2007 तक

(आ) मद (i) में, स्पष्टीकरण के स्थान पर निम्नलिखित स्पष्टीकरण रखा जाएगा, अर्थात् :-

“ स्पष्टीकरण :- “ शुद्ध स्वामित्वाधीन निधि ” से संदत्त साम्या पूंजी और मुक्त आरक्षितियों का वह योग अभिप्रेत है जिसमें से कम्पनी के अन्तिम संपरीक्षित तुलनपत्र में प्रकट होने वाली संचित हानियों और अमूर्त आस्तियों को घटाया गया हो । किसी आरक्षिति को केवल तब “ मुक्त आरक्षिति ” माना जाएगा जब वह लाभांश के रूप में वितरण के लिए उपलब्ध हो । आगे अधिमानी शेयरों के निर्गम के आगमों के रूप में रकम को शुद्ध स्वामित्वाधीन निधियों की संगणना करने के लिए सम्मिलित नहीं किया जाएगा । तथापि 26.7.2001 को या उसके पूर्व विद्यमान निधियों या पारस्परिक फायदा सोसाइटियों के लिए अधिमानी शेयरों के निर्गम के आगमों को वित्तीय वर्ष 31.3.2004 तक शुद्ध स्वामित्वाधीन निधियों की संगणना के लिए सम्मिलित किया जाएगा ”;

(iv) मद (ii) के पैरा (आ) में, निम्नलिखित परन्तुक अन्तःरक्षित किया जाएगा, अर्थात् :-

“ परन्तु बन्धक उधारों से संबंधित आवर्ती निक्षेपों की दशा में, आवर्ती निक्षेपों की अधिकतम अवधि निधि कम्पनी द्वारा मंजूर किए गए ऐसे उधारों की पुर्णसंदाय अवधि की तत्स्थानी होगी ” ;

(v) उपर्युक्त (ङ) मे,--

(क) मद (अ) में उपमद (xi) के पश्चात् निम्नलिखित मद रखी जाएगी, अर्थात् :-

“(xi क) कंपनी की संक्षिप्त वित्तीय स्थिति जो अद्यतन संपरीक्षित तुलन पत्र में हो” ।

स्पष्टीकरण-- “ संक्षिप्त वित्तीय स्थिति ” से वह संक्षिप्त वित्तीय स्थिति अभिप्रेत है जो गैर-बैंककारी वित्तीय कंपनियों और कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 642 के अधीन प्रकाशित गैर-बैंककारी वित्तीय कम्पनी और प्रकीर्ण गैर बैंककारी कंपनी

(विज्ञापन) नियम, 1977 के नियम 3 के उपनियम (2) के खंड (ज) में निर्दिष्ट की गई है।

(ख) मद (अ) में, उपमद (xii) के पश्चात् निम्नलिखित परंतुक अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

“परंतु उपखंड (ड) के उपबंध 26 जुलाई, 2001 को या उसके पूर्व विद्यमान निधि कंपनियों या पारस्परिक फायदा सोसाइटियों को जून, 2002 के प्रथम दिन से लागू होंगे ।”

(vi) उपखंड (च) में के, मद (i) के, उपमद (अ) में निम्नलिखित परंतुक अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

“ परंतु यह उपबंध केवल बचत खाता और आवर्ती निक्षेप के खाता धारकों को लागू नहीं होगा । ”

(vii) उपखंड (छ) में, निम्नलिखित परंतुक अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

“ परंतु 26 जुलाई, 2001 को या उसके पूर्व विद्यमान निधि कंपनियों या पारस्परिक फायदा सोसाइटी की दशा में, कुल निक्षेपों के दस प्रतिशत की उक्त विहित सीमा नीचे दी गई अनुसूची के अनुसार उत्तरोत्तर रूप से प्राप्त की जाएगी :-

अनुसूची

तारीख और वर्ष जो को हो	अभिप्राप्त किया जाने वाला प्रतिशत
31-3-2002	कुल निक्षेप का 2%
31-3-2003	कुल निक्षेप का 5%
31-3-2004	कुल निक्षेप का 10%

परंतु यह और कि अप्रत्याशित अभिबंधनों के मामले में निक्षेपकर्ताओं को पुनर्संदाय के प्रयोजन के लिए विनियामक प्राधिकरण के पूर्व अनुमोदन से, कतिपय शर्तों और ऐसी समय सीमा के, जिसकी ऐसे प्राधिकरण द्वारा 10% की विहित सीमा के प्रत्यावर्तन के लिए अनुज्ञा दी जा सकेगी, अस्थायी प्रत्याहरण की अनुज्ञा दी जाएगी ”;

(viii) उपखंड (ज) की मद (i) की उपमद (आ) के अंत में किंतु स्पष्टीकरण के पूर्व, विद्यमान परंतुक के स्थान पर, निम्नलिखित परंतुक रखा जाएगा, अर्थात् :-

“ परंतु स्थावर संपत्ति के संबंध में ऋण (बंधक ऋणों को छोड़कर, जो रजिस्ट्रीकृत बंधक द्वारा संपत्ति की प्रतिभूति पर मंजूर किया गया हो, जो संपत्ति अंतरण अधिनियम, 1882 की धारा 59 के अधीन रजिस्ट्रीकृत बंधक हो) बोर्ड द्वारा अनुमोदन की तारीख को बकाया समग्र ऋण के पचास प्रतिशत से अधिक नहीं होगा और वैयक्तिक ऋण प्रतिभूति के रूप में प्रस्थापित संपत्ति के मूल्य के पचास प्रतिशत से अधिक नहीं होगा । ऐसे ऋण की अवधि सात वर्ष से अधिक नहीं होगी । ”;

(ix) उपखंड (ज) में, मद (i) में, उपमद (इ) में, प्रथम परंतुक के पश्चात् निम्नलिखित परंतुक अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

“ परंतु यह और कि नियत निक्षेपों के संबंध में ऋण की दशा में ऋण की अवधि नियत निक्षेपों की शेष अवधि से अधिक नहीं होगी । ”;

(x) उपखंड (ज) में, मद (ii) में “ पांच प्रतिशत ” शब्दों के स्थान पर, “ साढ़े सात प्रतिशत ” शब्द रखे जाएंगे ;

MINISTRY OF LAW, JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS**(Department of Company Affairs)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 30th April 2002

G.S.R. 308(E).— In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 637 A of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), the Central Government hereby makes the following amendments in the Notification of the Government of India, Ministry of Law, Justice and Company Affairs (Department of Company Affairs) No GSR 555(E) dated 26.7.2001, and published in the Gazette of India, in Part II, Section 3, sub-section (i) dated 26.7.2001, namely: -

In the said notification, **in clause (1), -**

(i) **in sub-clause (a), -**

(a) for item (iv), the following item shall be substituted, namely:-

“(iv) issue any equity share of nominal value less than rupees 10/- :

provided that this shall apply to Nidhi companies incorporated on and after the issue of the said notification i.e. 26.7.2001:

provided further that no service charge shall be levied for issue of shares”;

(b) in item (v), at the end, the following proviso shall be inserted, namely: -

“ **provided** that this restriction shall not apply to allotment of shares up to the face value of Rs.100/- to new deposit holders or borrowers and in respect of qualification shares held by Directors” ;

(ii) **in sub-clause (b), in item (iii), in the provisos, for the figures “2002” occurring at both places, the figures “2003” shall be substituted;**

(iii) **in sub-clause (d), -**

(A) in item (i), for the first proviso, the following proviso shall be substituted, namely:-

“ **provided** in the case of Nidhis incorporated on or before 26th July,2001 having deposits in excess of the aforesaid limits, the same shall be brought to the prescribed limit by increasing the Net Owned Fund position or alternatively by reducing the deposit according to the time table given below:

<u>Ratio of Net Owned Fund to Deposits (as on 31.3.2001)</u>	<u>Date by which the company has to achieve prescribed ceiling of 1:20</u>
a) More than 1:20 but up to 1:25	<u>By 31.3.2004</u>
b) More than 1:25 but up to 1:40	<u>By 31.3.2005</u>
c) More than 1:40 but up to 1:80	<u>By 31.3.2006</u>
d) More than 1:80 and above	<u>By 31.3.2007</u>

(B) in item (i), for the explanation, the following explanation shall be substituted, namely: -

“ **Explanation:** - “Net Owned Funds” means the aggregate of paid up equity capital and free reserves as reduced by accumulated losses and intangible assets appearing in the last audited balance sheet of the company. A reserve shall be considered as a “free reserve” if it is available for distribution as dividend. Further, the amount representing the proceeds of issue of preference shares shall not be included for calculating Net Owned Funds. However, for Nidhis or Mutual Benefit Societies existing on or before 26.7.2001, the proceeds of issue of preference shares shall be included for calculation of Net Owned Funds up to the financial year 31.3.2004”;

(iv) in item (ii), in para (B), the following proviso shall be inserted namely:-

“ **provided** that in the case of recurring deposits relating to mortgage loans, the maximum period of recurring deposits shall correspond to the repayment period of such loans granted by the Nidhi company”;

(v) in sub-clause (e), -

(a) in item (A), after sub-item (xi), the following item shall be inserted, namely: -

“ **(xi) a summarised financial position of the company as in the latest**

audited balance sheet”.

Explanation: “**summarised financial position**” means the summarized financial position as referred to in clause (h) of sub-rule (2) of rule (3) of the Non-Banking Financial Companies and Miscellaneous Non-Banking Companies (Advertisement) Rules, 1977 published under section 642 of the Companies Act, 1956”.

(b) in item (A), after sub-item (xii), the following proviso shall be inserted, namely: -

“**provided that the provisions of sub-clause (e) shall apply from first day of June, 2002 to Nidhi companies or Mutual Benefit Societies existing on or before the 26th July, 2001**”.

(vi) in sub-clause (f), in item (i), in sub-item (A), the following proviso shall be inserted, namely; -

“**provided that this provision shall not be applicable to the account holders of savings account and recurring deposit only**”;

(vii) in sub-clause (g), the following proviso, shall be inserted, namely: -

“**provided that in the case of Nidhi companies or Mutual Benefit Society existing on or before 26th July, 2001, the said prescribed limit of 10% of the total deposits shall be achieved progressively as per schedule given below:**

SCHEDULE

Date and year as on	Percentage to be achieved
31.3.2002	2% of the total deposits
31.3.2003	5% of the total deposits
31.3.2004	10% of the total deposits

Provided further that temporary withdrawal shall be permitted with the prior approval of the Regulatory Authority for the purpose of repayment to depositors in cases of unforeseen commitments, subject to certain conditions and time limit which may be allowed by the such Authority for restoration of prescribed limit of 10%”;

(viii) in sub-clause (h), in item (i), at the end of sub-item (B) but before explanation, for the existing proviso, the following proviso shall be substituted, namely: -

“provided that the loans against immovable property (excluding mortgage loans granted on the security of property by registered mortgage, being a registered mortgage under section 59 of the Transfer of Property Act, 1882) shall not exceed fifty percent of the overall loan outstanding on the date of approval by the board and the individual loan shall not exceed fifty percent of the value of property offered as security. The period of such loan shall not exceed seven years”;

(ix) in sub-clause (h), in item (i), in sub-item (C), after the first proviso, the following proviso shall be inserted, namely: -

“ **provided** further that in the case of loan against fixed deposits, the period of loan shall not exceed the remainder period of fixed deposits”;

(x) in sub-clause (h), in item (ii), for the words “**five percent**”, the words “**seven and a half percent**” shall be substituted;

[F. No. 5/7/2000-CL-V]

RAJIV MEHRISHI, Jt. Secy.

